यौन उत्पीड़न : एक विश्लेषण

यौन उत्पीड़न एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। हालांकि यौन उत्पीड़न वर्षों से होता रहा है और इसकी प्रारंभिक घटना की जानकारी अभी शोध का विषय है। आदिमानव के समय में यौन उत्पीड़न भी व्याप्त था और उसके खिलाफ विद्रोह भी था, परंतु वह आज जैसा विचारात्मक और स्वरात्मक नहीं था। निश्चित रूप से जानवर भी यौन उत्पीड़न से प्रभावित व उसके प्रति विद्रोह व्यक्त करते थे। यह विद्रोह, विरोध मानसिक स्तर से चलता हुआ आक्रामक भी होता था। कुछ स्थलों पर यह मृत्युदण्ड तक परिणत होता था। जैसे कुछ पशु अपने जोड़े की मादा का यौन उत्पीड़न करने वाले को मार डालते थे तथा कुछ मादा अपने उत्पीड़क को मार डालती थीं। जैसे-जैसे मानव प्रबुद्ध प्राणी बनता गया, यह समस्या और गहराती चली गयी। जनजाति के समूहों में स्त्री प्रधान परिवार होने तथा स्त्री को वैवाहिक या नर चुनने की स्वतन्त्रता होने के बाद भी यौन उत्पीड़न जारी रहा। आज उनके समाज को आंतरिक व बाह्य दोनों प्रकार के यौन उत्पीड़न की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इसी प्रकार यह समस्या आज के संपूर्ण समाजों की समस्या है। कारण बढ़ते ही जा रहे हैं। पहले अपने पिता, चाचा, रिश्तेदारों के साथ स्त्री सुरक्षित थी, आज वहां भी सुरक्षित नहीं है। ऐसी स्थिति में आज सभी संस्थानों में आंतरिक शिकायत समिति का गठन किया गया है। इस समिति के द्वारा उन मामलों का निर्णय त्वरित किया जाता है, जो मामले यौन उत्पीड़न से संबंधित होते हैं। यौन उत्पीड़न के मामलों की त्वरित जांच, दंडविधान-प्रक्रिया का सुगमतापूर्वक संचालन आदि इस समिति के प्रमुख कार्य हैं। समिति के विषय प्रारंभिक काल से आज तक समाधान के बजाय समस्या बनते चले गए। विभिन्न समाजशास्त्रियों एवं स्त्रीविमर्शकारों ने इन विषयों पर वृहद् शोधकार्य किए हैं तथा विश्वस्तर व भारतीय स्तर पर भी अनेक शोधकार्य किए गए और हो रहे हैं। विभिन्न कानूनी प्रावधानों के बावजूद भी औरतों का उत्पीड़न किया जा रहा है। इसका मतलब कानून को अमलीजामा नहीं पहनाया जा पा रहा है। कानून के ठेकेदार किसी न किसी रूप से कानून से खिलवाड़ कर स्त्रियों की जिंदगी को बर्बाद कर रहे हैं। अनपढ़ व सीधी-साधी ग्रामीण स्त्रियां, लड़कियां, औरतें आज भी शोषण की शिकार हैं। पढ़ी-लिखी स्त्रियों में भी काफी आज भी पुरूषों द्वारा अवशोषित की जा रही हैं। 'मी टू' कैंपेन में आज दिन-प्रतिदिन नए-नए यौन शोषण के किस्से प्रकाश में आ रहे हैं। परंतु कुछ स्त्रियां तो स्वयं स्वीकार कर रही हैं कि फिल्म इंडस्ट्री में तो सब कुछ समझौते से होता है। ऊंची उपलब्धि व सफलता की शॉर्टकट रास्ता या अति महत्वाकांक्षा भी स्त्रियों को स्वयं इस जाल में फांसने का कार्य कर रही है।

डॉ. ओम मिश्रा
डॉ. भीमराव अम्बेडकर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय।